"बरसते हुम प्रेम की बूँदें।"

अपने आप को सजाते हुम,
वसुधा करता था ख्याल।
प्रेम से भरा मन हुम,
खोज करता था प्यार।

किया था वसुधा ने,
प्रेम का इंतजार कुछ काल।
पूछता है ईश्वर को प्रभु देने,
जब अंत होता था एक साल।

पूछा ईश्वर ने वसुधा को,
क्यों खोजता है प्रम ?
पूछा वसुधा ने ईश्वर को,
प्रेम बिना जीने कैसे?

इस आशा पर, खुशी से,
करता है सृजन ईश्वर।
वसुधा को मिलता है ईश्वर से,
ओस के रूप में प्यार।

वसुधा के बाल जैसे पत्तों में;
लिपटते रहे ओस की बूँदें।
प्यार से उन जुल्फों में;
बरसने लगी प्रेम की बूँदें।

शिशिर से सूखा रहे पेड़ों का,
मन तो जला था गम से।
खोजता था आश्वास का,
मिलता था ओस की बरसाना।

देखा था वसुधा ने;
प्रेम मिलते अपनी प्रकृति को।
अब देखने लगे वसुधा ने,
मन में ओस बरसते मानव को।

देखा वसुधा ने एक लहजा से,
एक प्रेमी-प्रेमिका का मिलना।
देखा प्रेमी ने प्रेमिका की आँखों से,
प्रेम की ओस का बरसना।

मिला था वसुधा एक आदमी से,
जिसे नहीं था जीने की आशा।
पर उसका मित्र की कहने से,
मन में बरसा था ओस की बूँदें।

देखा वसुधा ने एक माँ को,
अपने जन्म लिया बच्चे को देखते।
उतनी सहने का बाद तो,
मिला था मन में ओस की बरसना।

इन हिमकणों से मिलता था,
इस पूरा धरती को प्यार।
वसुधा की आशा से मिलता था,
ईश्वर का एक खूबसूरत जादू।

सभी के मन में होता है,
इन बूँदों का बरसात।
सभी को मिलता है,
ईश्वर का प्यार का एक लहजा।

Item Code: ..... Participant Code: .....

इस जान में सभी के मन में,
एक बार ही होता है इस प्यार का बरसात।
पर मन में बरसते ओस में,
अलग रहे सबको मिले प्यार का रूप।

पर सब काल में ओस की बूँदें बरसने लगी,
"ओस की बूँदें बरसने लगी"।
पर सब काल में प्रेम की बूँदें बरसने लगी,
"प्रेम की बूँदें बरसने लगीं"।